GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2014/56766

ISSN 2348-2397

UGC Approved Care Listed Journal

Shodh Sarita

An International Multidisciplinary Quarterly

Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 8 · Issue 29 · January to March 2021

Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Sharma

D. Litt. - Gold Medalist

sanchar

Educational & Research Foundation

ISSN - 2348-2397
UGC CARE Approved Journal
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 8, Issue 29, Jan.- March(I), 2021
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

कमल कुमार के उपन्यास 'यह खबर नहीं' में राजनीति युग बोध

❑ सिवेन्द्र कुमार *

समय की गतिशीलता के कारण अब राजनीति के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहा है इसका मुख्य कारण है शासन पद्धति में बदलाव होना। राजनीति का क्षेत्र अधिक विस्तृत एवं व्यापक बन जाता है। राजनीति में तत्कालीन शासन तंत्र के प्रति समाज की धारणा, शासन तंत्र द्वारा व्याप्त भ्रष्टाचार, अधिकारियों द्वारा निर्धारित नीतियों का पालन, शासन चलाने में पुलिस की भूमिका, शोषण, राजनीतिक नेताओं का आचरण और उनके क्रिया–कलाप, संपूर्ण शासन तंत्र, समाज का इससे संतुष्ट होना या वर्तमान व्यवस्था को बदलने पर उद्धत होना आधुनिक राजनीति तंत्र की नीतियां मनुष्य के उत्थान एवं पतन में कितनी उत्तरदायी है। ये सब इसमें शामिल हो जाते हैं।

साहित्य तथा राजनीति की परिभाषा

1. साहित्य के माध्यम से व्यक्ति राज्य से अपनी अपेक्षाओं, आशाओं और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करता रहा है। भले ही आज हम उन पर भी हँस लें। उन्हें मात्र काल्पनिक कह लें किंतु आज उन्हीं आदर्श को प्राप्त करना ही राजनीति दर्शन का मुख्य लक्ष्य है। प्रेमचंद जी ने "साहित्य को राजनीतिज्ञों के आगे चलने वाली मशाल कहा है।"[1]
2. "साहित्य और राजनीति यथार्थ रथ के उन दो पहियों के सदृश्य हैं जो अलग–अलग होने पर एक दूसरे के पूरक है।"[2]

स्वार्थ और राजनीति

आज हम अगर स्वार्थी मनुष्य की बात करें तो वह बहुत ही आसानी से प्राय: हर क्षेत्र में मिल जाते हैं। लेखिका ने भी इसी स्वार्थ की राजनीति का वर्णन अपने 'अपार्थ' और 'यह खबर नहीं' उपन्यास में किया है। इसी स्वार्थ की राजनीति का वर्णन स्वार्थ भरी राजनीति का यथार्थ चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है कि मनुष्य अपने लालच में कितना अंधा हो गया है कि सिर्फ उसे अपना ही हित सर्वस्व लगता है।

बहुत से राजनेता अपनी राजनीति की आड़ मे अपने काले कारनामों को अंजाम देते रहते है दुनिया की नजरों में वे अपनी छवि को साफ सुथरी रखना चाहते है तथा दूसरे लोगों को पैसो का लालच देकर उनसे अपने लिए गलत काम करवाते हैं 'यह खबर नहीं' उपन्यास में राजनेताओं का एक खास आदमी सुरेश जो जेल में बंद था परन्तु राजनेता तथा पुलिस की मदद से वह हर राज जेल से बाहर आकर लूटपाट, चोरी करता और अंदर चला जाता।

"सुरेश जेल में था। कई हत्याओं और लूटपाट के सिलसिले में। उस पर अपराध के कई मामले थे। शब्बू ने सुरेश से बात की थी। कागजों पर वह जेल में था पर हर शाम को वह शहर के बाजर में होता। राजस्व वसूलता, लूटपाट करता, अपराध और हत्या करता और वापिस जेल पहुँच जाता।"[3]

लेखिका ने मनुष्य की इसी स्वार्थी दोगली नीति का चित्र प्रस्तुत किया है कि आज भी हमें ऐसा हमारे समाज में देखने को मिलता है। प्रत्येक मनुष्य आज इस युग में इस कदर अंधा हो गया है कि वह हर क्षेत्र में केवल स्वार्थों की ही राजनीति अपनाता है।

लेखिका ने मनुष्य की इसी स्वार्थी नीति का वर्णन अपने उपन्यास 'यह खबर नहीं' में किया है। इसमें दिखाया गया है कि एक मंत्री किस प्रकार अपनी राजनीति के कारण अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है तथा दूसरों को अपने पद का रौब दिखाकर उनसे भी गलत कार्य करवाता है। भीमा को मंत्री के आदमी कहते हैं कि वे उन्हें कुछ भी नहीं होने देंगे। क्योंकि पुलिस भी उनकी, सरकार भी उनकी सभी विभाग मंत्री के पास हैं। मंत्री की शह के कारण भीमा मंत्री के लिए गैंडे के सींगों का महंगा तेल लाता है, जिसकी बाजार में कीमत लाखों में है। इसके अलावा वह मंत्री के लिए हाथी, चीतों, बाघ की खाल, उनके दांत आदि चीजें मंत्री जी को भेंट करता है। इन सभी की अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कीमत बड़ी भी है और ये मंहगे दामों पर बिकते हैं। लेखिका ने यहां मंत्री के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि आज मनुष्य केवल अपना उल्लू सीधा करने में लगा हुआ है। वह एक मंत्री होकर भी केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है। आज भी यह बिल्कुल प्रासंगिक है क्योंकि सभी नेता सिर्फ अपनी जेब को भरने में लगे हुए हैं। वे देश का ही नमक खाकर उसी से गद्दारी करते हैं। उन्हें ना ही किसी नागरिक भी चिंता है और ना ही उस देश की जिसमें वह रहता है।

*पीएच0 डी0, हिन्दी विभाग, एम0 डी0 यू0, रोहतक

[1] प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य, पृ0 38

[2] प्रेमचन्द : विचार और अनुभूति, पृ0 119

[3] यह खबर नहीं, पृ0 41

ISSN - 2348-2397
UGC CARE Approved Journal
SHODH SARITA
Vol. 8, Issue 29, Jan.- March(I), 2021
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

"अरे सरकार मंत्री जी की है। पुलिस भी उनकी है। केन्द्रीय सीमा शुल्क विभाग, राजस्व सूचना निदेशालय, जांच ब्यूरो, तटरक्षक और सेना सब मंत्री जी के नीचे है। फिर चल अब।" चारों तरफ देखकर सीमा करतब सिंह के साथ भीतर प्रवेश करता है। मंत्री जी मुस्कुराते हैं। काला कलूटा भीमा आधा झुक कर मंत्री जी के पैरों की धूल माथे पर लेता है। करतब सिंह मंत्री जी के कान के पास मुंह ले जाकर धीमें स्वरों में कहता है गैंडे के सीगों से बना है साब। आदिवासियों का खास नुस्खा है। आप की उम्र बढ़े पर जोशो खरोश कम ना हो।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में एक किलो ढाई
लाख रूपये का है।
मंत्री जी मुस्कारायें थे। उनकी आंख फड़की थी।
"बाकी का क्या हुआ।

सब है साब! उसने कंधे पर रखी गठरी नीचे रखी थी और खोली थी जिसमें बाघों चीतों और हाथियों की खालें थी। उनकी हड्डियां और दांत मेढक की टांगें, सांपों, गिलहरियों, सियारों, लोमड़ियों, बिल्लियों और गिरगिटों इत्यादि की खाले थी।"[4]

भारतीय समाज हो या पाश्चात्य समाज स्वार्थी लोग या स्वार्थ की राजनीति करने वाले लोग प्राय हर स्थान पर ही मिलते हैं। कमल जी ने इस स्वार्थी राजनीति का चित्रण किया है।

नीलिमा जो एक शिक्षित महिला है। वह किसी कंपनी में काम करती है। इस कंपनी को बिजली आपूर्ति के लिए एक टेंडर मिला उस कंपनी ने बिजली आपूर्ति के टेंडर को रद्द करके अमेरिका की किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी के टेंडर की स्वीकृति दे दी। परतु नीलिमा अमेरिका की इस कंपनी से होने वाली विनाशलीला से परिचित हो चुकी थी क्योंकि जंगलों का सफाया कर रहे थे। लोग अपने घरों से बेघर हो रहे थे। साथ में पशु–पक्षियों का भी आवास छिन रहा था तथा दूसरी तरफ जो कंपनी स्थापित होगी। उससे निकलने वाला धुआं, रासायनिक पदार्थ सभी लोगों का नुकसान पहुँचाने वाला है। यहाँ लेखिका ने स्पष्ट किया है कि आज भी हमारे समाज में ऐसे मनुष्य हैं, जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किसी की जान की भी परवाह नहीं करते। आज भी हमारा संपूर्ण देश आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में अग्रसर है। बहुत सी कंपनी ऐसी हैं, जो लोगों की उनकी जमीनों की औने–पौने दाम देकर उनसे जमीन खरीदते हैं। वहाँ पर लगे पेड़ों को कटवाते हैं। फिर वहां अपनी कंपनी स्थापित करते हैं।

"अब वह एक इस्टीट्यूट के साथ रिसर्च के काम में लगी हुई थी। नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन को दो सौ दस मेगावाट की दो ईकाईयों को लगाने का प्रस्ताव रद्द करके विदेशी महत्वाकांक्षाओं की आड़ में अमेरिका बहुराष्ट्रीय कंपनी कांजेटिक्स एनर्जी इनकॉर पारटेड की दानवी परियोजना को स्वीकृत दे दी गई थी। वह देख रही थी– "जंगलों का सफाया हो रहा था, प्राकृतिक संपदा और कृषि का विनाश हो रहा था। फसलें बरबाद हो रही थी। हजारों लोग बेघर बार हो रहे थे। नीलिमा ने डेनिडा डेनिस इंटरनेशनल लिमिटेड की रिपोर्ट का अध्ययन किया था। राज्य में वन सचिव भी चिंतित थे। एक तरफ हजारों लोग विस्थापित होंगे। दूसरी और कारखाने से निकलने वाले खतरनाक उत्सवों, अवशेषों, राख इत्यादि से तरह बीमारियों से पीडित लोग।"[5]

लेखिका द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य केवल अपनी आत्मतृष्णा को शांत करना या केवल अपने स्वार्थों को साधना चाहता है। इसमें भले ही देश का या जनता पर कितना ही विनाशकारी प्रभाव क्यों ना पड़ता हो।

इसी उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने मंत्रियों की स्वार्थी राजनीति का चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है कि कोई भी मंत्री जब चुनाव का समय नजदीक आ जाता है तो वह अपने वार्डों में तथा अपने नगर या शहर में एक जागरूक व्यक्ति बनकर वहां की समस्याओं को निपटाने की कोशिश करता है। वह ऐसा केवल लोगों को मूर्ख बनाने तथा पार्टी में अपनी जगह बनाने के लिए करता है। वह अपने वार्ड में लाइट की व्यवस्था, नालियों की सफाई, कचरा उठाने की समस्या, पानी की समस्या, सीवरो की समस्या आदि को निपटाने को भी कोशिश करता है। ऐसा वह केवल अपनी स्वार्थ सिद्धी हेतु की करता है।

"आज इस कालोनी में कोई मंत्री आ रहा था। सप्ताह भर से तैयारी चल रही थी। सड़के साफ हो रही थी। मेन हाल ढके जा रहे थे। म्यूनिसिपैलिटी की गाडियां कचरा उठा कर ले जा रही थी। कचरा घर धोकर साफ किये जा रहे थे। वहां डीडीटी पाउडर छिड़का जा रहा था। नालियां जो महीनों से कचरा भर जाने के कारण रूकी थी, उन्हें निकाला और गाड़ियों में ढोकर ले जाया जा रहा था। आवारा बीमार कुत्तों को गाडियों में ले जाया जा रहा था। टेलीफोन की केवल जो पानी भर जाने में महीने से खराब थी। ठीक कर दी गई थी। सारे क्षेत्र नक्शा बदल गया था। कालोनी के प्रवेश पर बड़ा सा द्वार बनाया गया था।"[6]

हम आज भी इन सब कार्यों को एक मंत्री द्वारा हमारे समाज के किसी ना किसी क्षेत्र में आसानी से देख सकते हैं। कोई भी मंत्री यह सब व्यवस्था क्षेत्रवासियों की सुविधा हेतु नहीं करता

[4] यह खबर नहीं, पृ0 79–80

[5] यह खबर नहीं, पृ0 74–75

[6] यह खबर नहीं, पृ0 112

बल्कि वह आने वाले समय के चुनाव को जीतने की तैयारी करता है क्योंकि आज के युग में सत्ता भी धोखे बाजों तथा स्वार्थी व्यक्ति की ही है।

निष्कर्ष

अतः अंत में कहा जा सकता है कि हम समाज रूपी सत्ता का हर कोई मंत्री अपने पद का फायदा उठा कर अपनी मर्जी से हर काम को करवा सकता है। आम जनता इन सब भ्रष्टाचारों में दुखी होती है। अगर उनका नजदीकी कोई राजनीति सत्ता में नहीं होता तो उनके काम रूक जाते हैं। इसी प्रकार से 'यह खबर नहीं' उपन्यास के माध्यम से भी किस प्रकार से एक कर्मचारी से काम करवाने के बाद भी उसकी प्रमोशन को रोक दिया जाता है। आज हमारे समाज में सुरेश की तरह अनेक ऐसे व्यक्ति है जो पैसों के लिए किसी की भी जान ले सकते है क्योंकि ऐसे लोगों से राजनेताओं के साथ पुलिस भी मिली होती है नेता लोग जनता की नजरों में अपनी छवि को साफ रखने के लिए ऐसे लोगों को मोहरा बनाकर अपने स्वार्थो की पूर्ति करते है। इसी तरह हम कह सकते हैं कि मंत्री आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण बन गए हैं। इसी कारण बताया गया है कि समाज में राजनीति का अपना एक महत्त्व होता है।

APPROVED UGC CARE ISSN - 2348 - 2397

SHODH SARITA

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPILANARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Ref.: SS/0113/2021

Certificate of Publication

सिवेन्द्र कुमार

पीएच0डी0, हिन्दी विभाग, एम0 डी0 यू0, रोहतक

TITLE OF PAPER

कमल कुमार के उपन्यास 'यह खबर नहीं' में राजनीति युग बोध

This is certified that your research paper has been published in

Shodh Sarita, Volume 8 Issue 29, Jan. to March 2021

Date : 13-03-2021

SHODH SARITA
Editor in Chief

CHIEF EDITORIAL OFFICE

448/119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW - 226003, U.P., INDIA

GOVT. OF INDIA - RNI No. UPBIL/2015/62096
APPROVED UGC CARE
ISSN-2229-3620

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

SHODH SANCHAR BULLETIN

★ Vol. 10 ★ Issue 38 ★ April to June 2020

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Sharma

D.Litt. - Gold Medalist

Published by

SANCHAR EDUCATIONAL & RESEARCH FOUNDATION LUCKNOW. U.P. (INDIA)

Website : http://www.seresearchfoundation.in
http://www.seresearchfoundation.in/shodhsancharbulletin/

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 38 (II), April - June 2020
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

सन्तों का नारी–विषयक चिंतन

सिवेन्द्र कुमार[1]

भक्तिकालीन निर्गुण काव्य में नारी विषयक कविताओं का अभाव है निर्गुण कवि अध्यात्म पथ के पथिक थे. इसीलिए उन्होंने या तो अपने ईश्वर की महिमा का गायन किया है. या साधना–पथ में व्यवधान डालने वाले तत्वों की व्यंजना की है। निर्गुण मार्गी कवियों ने आचरिक और मानसिक निर्मलता पर भी बल दिया है। ज्ञातव्य है कि संतों ने नारी के दो रूपों की अवतारणा की है। एक तो उसका कामिनी रूप है जिसे सन्तों ने गर्हित और त्याज्य बताया है, दूसरा उसका सती रूप है जो सन्तों के लिए बड़ा मान्य और ग्राह्य है।

सन्त कबीर ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कनक और कामिनी की निन्दा की है। कबीर ने जहाँ नारी के निन्दित रूप को व्यक्त किया है, वहाँ उनका प्रयोजन नारी के कामिनी रूप से ही है। उन्होंने नारी को नरक का कुण्ड बताया है[1] तथा परनारी को पैनी छुरी माना है। उनकी यह भी धारणा है कि परनारी के कारण रावण जैसे महाप्रतापी राजा को विनाश भी हुआ।[2] इसके बावजूद सामान्य जन उससे सावधान रहने के लिए नहीं सोचता है। कोई विरला–विशिष्ट ही सुन्दरी नारी से बच पाता है।[3] चूँकि कामिनी भक्ति, मुक्ति और ज्ञान की विनाशिका होती है, इसलिए कबीर उसे त्याज्य बताते है[4] वह ऐसी नारी को मंजारी[5] आदि न जाने क्या–क्या कहते है कामिनी की इसी भयंकरता को जानकर वे साधकों को उपदेश देते है कि ये योगियों! नारी के नयन से बचकर साधना करो। यदि तुम तनिक भी चूक गये तो कामिनी तुम्हें वैसे ही उठा ले जायेगी, जैसे बिल्ली चूहे को उठा ले जाती है। यह कामिनी इतनी शक्तिमान है कि इससे श्रृंगी ऋषि, गोरखनाथ महादेव मत्स्येन्द्रनाथ आदि देवर्षि भी नहीं बच सके।[6]

सन्त कबीर ने वासना और मायामयी नारी की जितनी कठोरता के साथ भर्त्सना की है, उतनी ही उदारता और सहृदयता से पतिव्रता और सती नारी की प्रशंसा– अभ्यर्थना की है। कबीर प्रतिव्रता नारी का बड़ा गौरव देते है। इसी भावना के कारण वे सती को साधु, शूर, संत आदि की श्रेणी में रखते है[7] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि कबीरदास भक्त और पतिव्रता को एक कोटि में रखते थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि कबीरदास भक्त और पतिव्रता को एक कोटि में रखते थे। दोनों का धर्म कठोर है, दोनों की वृत्ति कोमल है दोनों के सामने प्रलोभन का दुस्तर जंजाल है, दोनों ही कांचन धर्मी है। कबीर की मान्यता है कि पतिव्रता नारी कुरूप होती हुई भी अच्छी लगती है। वह नंगी रहने पर भी लज्जायुक्त रहती है।[8]

सन्त रैदास ने भी परनामी–प्रणय की निन्दा की है, लेकिन सौभाग्यवती नारी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने उसे संसार में सर्वाधिक सुखी बताया है।[9]

गुरू नानक की मान्यता यह है कि जो नारी अपने प्रिय को पहचानती है, वह सौभाग्यवती है और जिसने अपने प्रिय को नहीं पहचाना, वही कुरूप, कुटिल, कुलक्षिणी और कुनारी है। उनकी चेतना निन्दा और प्रशंसा के जंजाल में नहीं फँसी है। वे निन्दा के स्थान पर निन्दित कर्म को त्यागने का परामर्श देते है तथा कुमारी और सती सुहागिन नारियों की सजल मन से प्रशंसा करते हैं।

सन्त कवि दादू ने नारी के कई रूप बताये है। उन्होंने नारी को कहीं भामिनी कहा है और कहीं भागिनी मोहिनी, विरहिणी, सती एवं पतिव्रता कहा है इनमें कामिनी, भामिनी, मोहिनी रूप की दादू ने बड़ी निन्दा की है जबकि उन्होंने विरहिणी, आज्ञाकारिणी, सती पतिव्रता आदि नारी–रूपों के प्रति अत्यंत

[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

आदर भावना व्यंजित की है दादू ने भी कबीर की भाँति कटु होकर भामिनी की बड़ी भर्त्सना की है। उनकी स्पष्ट वाणी है कि जो नारी अपने प्रिय की सेवा नहीं करती है, वह 'डाइन' है।[10]

सन्त मलूकदास ने भी नारी को माया रूपा माना है यह माया काली नागिनी है जिसने सकल संसार को डस लिया है। इन्द्र ब्रह्म, नारद व्यास, शिव, कंस शिशुपाल, रावण आदि न जाने कितने शक्तिशाली लोगों को इसने डसा है, मूलकदास की क्या हैसियत।

मूलकदास ने कामिनी को मिसरी की छुरी के समान माना है वे नारी को भजन का भंजक भी मानते है वे कहते है कि नारी नयनों से चोट करती है, अतः उसकी तरफ मत देखो। वे उसी नारी को सौभाग्यवती मानते है, जिसके पति राम है तथा वही नारी सचमुच माता कहलाने योग्य है जिसका पुत्र ईश्वर–भक्त है जो नारी ईश्वर–भक्त नही है, वह राँड है।

सन्तों में सुन्दरदास ने नारी की बड़ी व्यापकता के साथ निन्दा की है उनका मन्तव्य है कि ठग तो वस्त्र लूटते है, परंतु नारी स्पर्शमात्र से ही त्वचा का भी हरण कर लेती है इसी प्रकार धनी धरमदास भी मानते है कि नारी सर्वस्वहारिणी है।

नारी निन्दक सन्तों के शिरोमणि सन्त सुन्दरदास है। सुन्दरदास के सन्दर्भ में कथित यह कथन निराधार नहीं है। जिन अंगों की सुन्दर व्यंजना करते–करते कविगण न तो कभी ऊबते है, और न कभी थकते है उन्हीं अंगों का जब सुंदरदास वर्णन करते है, तब उस वर्णन को देखकर तथा उसे भावित कर मन में बड़ी वितृष्णा पैदा होती है 'सुन्दर विलास' के "नारी निन्दा को अंग" में उन्होंने नारी के शरीर को वन–तुल्य कहा है साथ ही साथ उसके मुखमण्डल को राक्षसीं के समान कहकर बड़ी अवमानना की है इतना ही नहीं, सन्त सुन्दरदास ने नारी के प्रत्येक अंग को नरक के समान कहने में भी तनिक संकोच नहीं किया है।

सुन्दरदास ने नारी की सराहना करने वाले को भी महामूर्ख की संज्ञा दी है क्योंकि वे मानते है कि नारी अत्यंत मलिन तथा अशुद्ध है उसकी सराहना क्यों की जाये?

नारी रूप के ऐसे भयंकर निन्दक से उसके रूप की प्रशंसा की अपेक्षा नहीं की जा सकती है लेकिन आश्चर्य है कि जब सुन्दरदास की चेतना पतिव्रता नारी की और उन्मुख होती है, तब वे उसके प्रति अत्यंत विनत दिखायी पड़ने लगते है। उन्होंने अपनी वाणी में सती और पतिव्रता नारी की मुक्त मन से प्रशंसा की है।

निर्गुणमार्गी सन्तों ने नारी के पतिव्रता रूप के अतिरिक्त नारी के और भी रूपों का उल्लेख किया है इसी सन्दर्भ में सुन्दरदास द्वारा चित्रित कर्कशा नारी का उल्लेख किया जा सकता है सुन्दरदास की धारणा है कि जिसके घर में कर्कशा नारी रहती है, वहां रात–दिन अशान्ति रहती है।

कबीर ने बहुपत्नी प्रथा का उल्लेख किया है पारिवारिक जीवन के सन्दर्भो में नारी को कही माता, कही कुलवधु, कहीं सास, ननद, जेठानी आदि रूपों में भी प्रस्तुत किया गया है। कबीर ने वधु की कठोर परिस्थिति की व्यंजना के परिप्रेक्ष्य में सास ननद, जेठानी आदि का शब्दांकन किया है।

सन्तों ने जहाँ पर माता का उल्लेख किया है, वहाँ वह सम्मान–भावना का बोधक है कबीर ने माता की क्षमाशीलता को उदिदष्ट करके हरि को जननी के रूप में भावित किया है। सन्तों ने माता–पिता के सम्बन्ध को बहुत महत्व नहीं दिया है। वे इन्हें भी माया के भेद मानते है।

सन्तों की नारी–विषयक उक्त भावना के परिशीलन के अनन्तर कहा जा सकता है कि सन्तों के काव्य में नारी के सकल स्वरूप की व्यंजना नहीं हुई है। इनके समय नारियों की क्या सामाजिक स्थिति थी कुछ स्पष्ट नहीं है क्योंकि सन्तगण इस विषय में मौन है। सन्तों का धर्म और कर्म ईश्वर भक्ति था। उन्होंने ईश्वर–भक्ति के ही सन्दर्भ में नारी की अवतारणा की है चूँकि नारी बड़ी आकर्षणमयी होती है उसका कामाकर्षी रूप साधारण साधक को साधना से विचलित कर देता है, इसीलिए इन निर्गुण सन्तों के कामिनी रूप की बड़ी भर्त्सना और अवमानना की है लेकिन नारी के पतिव्रत और सती

रूप की उपेक्षा नहीं कर सके है। समस्त सन्त नारी के पतिव्रत और सती रूप के प्रति अत्यंत विनत है, क्योंकि ऐसी नारियाँ मंगलविधायिनी शक्ति से सम्पृक्त होती है इसलिए नारी के कटु निन्दक कबीर उसके रूप पर करोडो रूपसियों को न्योछावर करने में जरा–सा भी नहीं हिचकते है।

पतिव्रता मैली भली काली कुचिल कुरुप,
पतिव्रता के रूप पर बारौ कौटि सरूप।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कबीर ग्रन्थावली : साखी 20/15
2. सन्त बानी संग्रह : भाग एक, पृ0 54
3. कबीर ग्रन्थावली : साखी 20/4
4. सन्त ग्रन्थावली : साखी 20/11
5. सन्त बानी संग्रह, भाग एक, पृ0 5
6. कबीर साहब की शब्दावली : भाग एक, पृ0 32
7. कबीर साखी संग्रह, पृ0 23
8. कबीर साखी संग्रह, पृ0 28–29
9. रैदास जी का बानी, पृ0 30
10. दादू दयाल की बानी : भाग एक, पृ0 8/54

APPROVED UGC CARE

ISSN - 2229 - 3620

SHODH SANCHAR BULLETIN

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPILANARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Certificate of Publication

सिवेन्द्र कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

TITLE OF PAPER

सन्तों का नारी–विषयक चिंतन

This is certified that your paper has been published in

Shodh Sanchar Bulletin, Volume 10 Issue 38 (II), April to June 2020

Date : 29-06-2020

Editor in Chief
SHODH SANCHAR BULLETIN
BILINGUAL INTERNATIONAL
RESEARCH JOURNAL, LUCKNOW

CHIEF EDITORIAL OFFICE

448/119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW - 226003, U.P., INDIA

महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ० सिवेन्द्र कुमार

पदनाम शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

ने 'महर्षि वाल्मीकि : मूल्य मीमांसा' विषय पर 18 सितम्बर, 2017 को महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ द्वारा आयोजित एक दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में भाग लिया ।

शोधपत्र का विषय रामकाव्य में नारी-विमर्श

पुष्पा	माया मलिक	
प्रो. पुष्पा	प्रो. माया मलिक	सहायक प्रो. अनिल
पीठासीन, महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ	संयोजक, हिन्दी विभाग	सह संयोजक, हिन्दी विभाग

महर्षि वाल्मीकि शोधपीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
(स्थापित वर्ष अन्तर्गत हरियाणा राज्य एक्ट 25 सन् 1976)
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद 'ए' ग्रेड

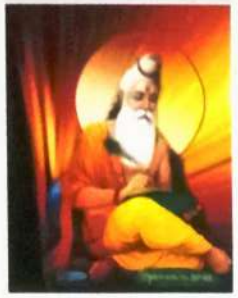

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

में स्थापित **महर्षि वाल्मीकि शोधपीठ** के तत्त्वावधान में आयोजित एकदिवसीय

अन्तः विषय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

महर्षि वाल्मीकि मूल्य मीमांसा

30 मार्च, 2019

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/श्रीमती/डॉ0 सिवेन्द्र कुमार (शोधार्थी)

संस्था महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने शोध पत्र

प्रस्तोता/प्रतिभागी/अध्यक्ष/मुख्य वक्ता/बीज वक्ता/वक्ता के रूप में अन्तःविषय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय प्रतिभागिता की एवं

"वाल्मीकि रामायण में मूल्य चेतना" विषय पर अपना

शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

पुष्पा
अध्यक्ष
महर्षि वाल्मीकि शोधपीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

वसुधैव कुटुम्बकम् संस्कृति सेवा आयाम

डी.ए.वी. स्कूल, सै०-14, फरीदाबाद

विद्या ददाति विनयम्

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

हरियाणा स्वर्ण जयन्ती व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित
साहित्य और मानविकी विषय पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

30-07-2017

हरियाणा में ग्रन्थ लेखन परम्परा

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./सुश्री/श्रीमती/श्रीमान् सिवेन्द्र

संस्था महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने

सत्र के मुख्यातिथि/विशिष्टातिथि/सारस्वतातिथि/मुख्यवक्ता/अध्यक्ष/प्रतिभागी के रूप में अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय प्रतिभागिता की एवं वैचारिक योगदान दिया।

इन्होंने सत्यात्मक पत्रकारिता का हरियाणा में उद्भव एवं विकास विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

डॉ हरिशरण वर्मा	डॉ केवल कृष्ण	डॉ विजय दत्त शर्मा
संगोष्ठी-निदेशक	संगोष्ठी-संयोजक	निदेशक हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

डी. ए. वी. महाविद्यालय, चीका (कैथल)

एवं उच्चतर शिक्षा महानिदेशालय हरियाणा, पंचकूला के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषयः संत साहित्य की वैश्विक प्रासंगिकता

दिनांकः 11 मार्च, 2018, रविवार

प्रमाण –पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ. श्री / श्रीमती / कु. सिवेन्द्र कुमार (शोधार्थी)

विश्वविद्यालय, महाविद्यालय हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने डी. ए. वी. महाविद्यालय, चीका

में आयोजित एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभागिता की। इन्होंने संत रैदास की सामाजिक चेतना

विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. जसबीर सिंह
संगोष्ठी संयोजक

डॉ. रमेश लाल
प्राचार्य
(डी. ए. वी. महाविद्यालय, चीका)

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर

अर्णव कलश एसोसिएशन

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाण-पत्र

अन्तः विषय

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री / डॉ० शिवेन्द्र कुमार

पदनाम शोध छात्र महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक

ने ''उच्च शिक्षा में दर्शन एवं नैतिक मूल्य विषय पर'' 19 नवम्बर, 2017 को बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक दिवसीय अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध-पत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी / वक्ता / अध्यक्षता के रूप में भाग लिया ।

शोध पत्र का विषय उच्च शिक्षा में नैतिक मूल्यों की भूमिका

डॉ० मारकण्डेय आहूजा	डॉ० पुष्पा	रमेश चन्द्र कौशिक
कुलपति	प्रोफेसर	अध्यक्ष
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक	महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय	अर्णव कलश एसोसिएशन

क्रमांक : 142

दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

द्वारा स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित

एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दीः विस्तार और चुनौतियाँ

दिनाँक 27 अक्तूबर, 2017 दिन शुक्रवार

प्रमाण–पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि प्रो॰/डॉ॰/सुश्री/श्रीमती/श्रीमान् सिवेन्द्र कुमार संस्था महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक ने सत्र के मुख्यातिथि/विशिष्टातिथि/बीज वक्ता/ मुख्य वक्ता/अध्यक्ष/आयोजन समिति/शोधार्थी/प्रतिभागी के रूप में एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय प्रतिभागिता एवं वैचारिक योगदान दिया। आपने हिन्दी भाषा कल, आज और कल, संयुक्त राष्ट्र संघ और हिन्दी विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया ।

संगोष्ठी-संयोजक
डॉ॰ कामराज सिन्धु

संगोष्ठी–निदेशक
प्रो॰ मंजुला चौधरी

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

नेशनल इंटिग्रेशन एंड वेलफेयर सोसायटी, कुरुक्षेत्र

हिन्दू गर्ल्ज कॉलेज, सोनीपत में

हरियाणा स्वर्ण जयन्ती व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित

साहित्य और मानविकी विषय पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

03-09-2017

भारत के वैश्विक प्रसार के विविध आयाम

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./सुश्री/श्रीमती/श्रीमान् सिवेन्द्र; शोधार्थी

संस्था महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक ने

सत्र के मुख्यातिथि/विशिष्टातिथि/सारस्वतातिथि/मुख्यवक्ता/अध्यक्ष/प्रतिभागी के रूप में अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय प्रतिभागिता की एवं वैचारिक योगदान दिया।

इन्होंने भाषा की दृष्टि से भारत के वैश्विक प्रसार के विविध आयाम विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

रवि गुप्ता
अध्यक्ष
निवेस, कुरुक्षेत्र

डॉ केवल कृष्ण
संगोष्ठी-संयोजक

डॉ विजय दत्त शर्मा
निदेशक
हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला

महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

❖ प्रमाण-पत्र ❖

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ० शिवेन्द्र कुमार

पदनाम शोधार्थी (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक

ने 'महर्षि वाल्मीकि : मूल्य मीमांसा' विषय पर 18 सितम्बर, 2017 को महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ द्वारा आयोजित एक दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में भाग लिया ।

शोधपत्र का विषय वाल्मीकि के राम

पुष्पा प्रो. पुष्पा पीठासीन, महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ	मायामलिक प्रो. माया मलिक संयोजक, हिन्दी विभाग	प्रो. अनिल सहायक प्रो. अनिल सह संयोजक, हिन्दी विभाग

संत कबीर शोध-पीठ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ० सिवेन्द्र कुमार

पदनाम शोधार्थी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक

ने ''मध्यकालीन संत साहित्य के कालातीत स्वर'' विषय पर **21** अक्तूबर, **2016** को संत कबीर शोध-पीठ द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में भाग लिया।

शोधपत्र का विषय मध्यकालीन संत साहित्य में चेतना के स्वर

प्रो. रामरती
चेयरपर्सन, संत कबीर शोध-पीठ

कृष्णा देवी
डॉ. कृष्णा देवी
संयोजक, हिन्दी विभाग

Sr. No. 41

Department of Sanskrit, Pali & Prakrit

MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY, ROHTAK

(A State University established under Haryana Act No. 25 of 1975)
(NAAC Accredited `A` Grade)

National Seminar

on

"HISTORY AND GEOGRAPHY AS NARRATED IN VALMIKI RAMAYANA"

March 27, 2017

CERTIFICATE

Certified that Mr/Mrs/Dr ...Surender Kumar.....

from .....Deptt. Hindi (P.H.D.).....

attended one-day National Seminar on "History and Geography as narrated in Valmiki Ramayana" organised by the Deptt. of Sanskrit, Pali & Prakrit, Maharshi Dayanand University, Rohtak on March 27, 2017. He/She presented a research paper titled...रामायण में पशु पक्षियों का वर्णन.....

Dr. Sunita Saini
Seminar Co-ordinator

Prof. Surendra Kumar
Seminar Director

महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाण -पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/डॉ० सिवेन्द्र कुमार

पदनाम शोधार्थी (म.द.वि., रोहतक)

ने ''लोक कल्याण के सन्दर्भ में महर्षि वाल्मीकि और संत नितानन्द'' विषय पर **10** नवम्बर, **2016** को शोध-पीठ द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में भाग लिया।

शोधपत्र का विषय महर्षि वाल्मीकि का जीवन दर्शन

प्रो. पुष्पा	**प्रो. रामरती**	**प्रो. सुशीला**
वेयरपर्सन, महर्षि वाल्मीकि शोध-पीठ	अध्यक्ष हिन्दी विभाग, म.द.वि. रोहतक	संयोजक, हिन्दी विभाग

National Seminar
on
Folk Literature and Performing Arts of Haryana

Organised by :

SURYA KAVI PT. LAKHMI CHAND JI CHAIR and DEAN STUDENTS' WELFARE
Maharshi Dayanand Unviersity, Rohtak
&
DEAN STUDENTS' WELFARE
STATE UNIVERSITY OF PERFORMING AND VISUAL ARTS, ROHTAK

CERTIFICATE

It is certified that Dr./Ms/Mr/ सिवेन्द्र
Designation शोधार्थी *Deptt./Institute* हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
attended the Seminar on 14-15 March 2019. ~~She~~/He ~~chaired a technical session and~~ presented a paper entitled हरियाणा की लोक संस्कृति और समाज

Dr. Jagbir Rathee
Director Youth Welfare
M.D.U., Rohtak

Prof. Jaibir S. Hooda
Chairperson, Surya Kavi Pt. Lakhmi Chand Chair
M.D.U., Rohtak

क्रमांकः 64

महर्षि-दयानन्द-विश्वविद्यालयः रोहतकम्

विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोगस्य विशिष्ट-सहायता-कार्यक्रमे
संस्कृत-पालि-प्राकृत-विभागेन समायोजिता

राष्ट्रिय-शोधसंगोष्ठी

विषयः- संस्कृतसाहित्ये रामकथा

28 मार्च 2018

प्रमाणीक्रियते यत् प्रो./डॉ./श्री/कुमारी सिवेन्द्र कुमार (शोधार्थी) हिंदी विभाग, म॰द॰वि॰ (रोहतक) विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोगस्य विशिष्ट-सहायता-कार्यक्रमे संस्कृत-पालि-प्राकृत-विभागेन समायोजितायां राष्ट्रिय-शोधसंगोष्ठ्यां भागं गृहीतवान्/गृहीतवती। अर्य/इयम् वाल्मीकि रामायण में चित्रित दर्शन शीर्षकेन शोधपत्रं प्रस्तुतवान्/प्रस्तुतवती सत्रस्य अध्यक्षतां कृतवान्/कृतवती।

प्रोफेसर सुरेन्द्रकुमारः	**प्रोफेसर कृष्णा आचार्य**	**डॉ. सुनीता सैनी**
समन्वयकः, विशिष्ट-सहायता-कार्यक्रमः	विभागाध्यक्षा	संगोष्ठी-संयोजिका
संस्कृत-पालि-प्राकृत-विभागः	संस्कृत-पालि-प्राकृत-विभागः	संस्कृत-पालि-प्राकृत-विभागः
म.द.वि. रोहतकम्	म.द.वि. रोहतकम्	म.द.वि. रोहतकम्

G-1483-200, MDU Press